श्रीसर्वज्ञायनमः ।

साकार दीपिका

श्रीधर्मघोषाचार्य्यकृत

जैनधर्मावलम्बी सिताम्बराम्नायी

श्रीयुक्त बाबू रामचन्द्र सेठिया की

आज्ञानुसार

शहर कलकत्ता

मानिकतलाष्ट्रीट नम्बर ७९ पुराणप्रकाश यन्त्रमें

श्रीमहेन्द्रनाथ भट्टाचार्य्य के द्वारा मुद्रित

और प्रकाशित हुआ ।

सम्वत् १९३१ ।

श्रीसर्वज्ञायनमः।

साकार दीपिका

श्रीधर्मघोषाचार्य्यकृत

जैनधर्मावलम्बी सिताम्बराम्नायी

श्रीयुक्त बाबू रामचन्द्र सेठिया की

आज्ञानुसार।

शहर कलकत्ता

मानिकतलाष्ट्रीट नम्बर ७८ पुराणप्रकाश यंत्रमें

श्री महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य्य के द्वारा मुद्रित

और प्रकाशित हुआ।

सम्वत् १९३१

भूमिका।

इन दिनों जैनशास्त्रकी आलोचना अति अल्प होनेसे, प्राय श्रावक लोग जैनधर्म्म की बातों से अनभिज्ञ हो रहे हैं। बहुतेरे श्रावक, द्रव्य व्यय और परिश्रम के भय से भीत होकर साकारोपासना के विरोधी हुए जाते हैं, और धर्म्म जीवनरूपी सुख से वंचित होते हैं। इस संसार बन के विद्याहीन श्रावक-पथिक लोग, जो पाखण्डियों के बात में आकर धर्मपथ में भटकेते हैं, उनपर दयाभाव प्रकाश करके श्रीधर्मघोषाचार्य्य जी ने, जो चर्चा लिखी थी, उसको मैंने श्रावक मण्डलीमें प्रकाश किया। अब पाठक लोग इस को मनोयोग पूर्वक समझ कर आलोचना करें, और भूल चूक को सुधार कर पढ़ें, तो मेरा परिश्रम सार्थक हो।

श्रीरामचन्द्र सेठिया।

ता २ मार्च सन १८७५

बालूचर।

श्रीसर्वज्ञाय नमः।

छिवें प्रश्न लिखें हैं तिनकी विगति।

१ प्रश्न। भगवान् जीकी पूजाका अधिकार खुलासा अब चन्दन पुष्प आभूषण प्रमुख अधिकार जीवाभिगमजीमे त्रिपाठमें देख लेना पत्र २८८

२ प्रश्न। दाढांरो बहुमान्य प्रतिमाजीकि तुल्य है। ऐसा अधिकार जीवाभिगमजीमें देखना त्रिपा०। प० २८५

३ प्रश्न। फूल सचित्त है ए अधिकार रायपसेणीमे है। सूत्र पाठ। जलज थलज भासुर प्पभूयस्स विंटट्ठाइयस्स इत्यादि टीकापाठ जलज पद्मादि स्थलजविचिकिलादि इत्यादि प०।२८ सुद्ध समकिती एकावतारी सरियामदेव जिनप्रतिमा पूजी। उसका फल हितसुखमोक्ष सत्रमे वखाण्या। फेर फूलका अधिकार समवायांगजी सूत्रमें ३४ अतिसयरे अधिकारे १८ अतिसयमे देख लेना। और आवस्सकजीमे

लिखा है मणियारो अर्थ पुष्पसेती पूजन किया है देख लेना शक्रस्तव ।

४ प्रश्न । श्रीठाणांगजीमे कह्या है । देवता नन्दी स्वर द्वीप जाय जिनबिंब पूजे भाव पूजा पिण करै ।

५ प्रश्न । श्रीजीवाभिगमजीमें कह्या है । विजै देव अधिकार तिहां । प्रथम विजै देव उठै । वायव कूणसे आवै । पूरव द्वरवजे जाय । तिहां देवछन्दै में जिन प्रतिमा है । तिणकुं हर्षवन्त होय करके नमस्कार करै भक्तिभाव करै । पछे जिनांगै प्रमार्जना करै सुगन्धो-दकसे पखाल करै । अंग लूहणा करै । चन्दन फूल धूप पूजा करै । पछे शक्रस्तव करै । ए अधिकार प्रगटपणे श्रीजीवाभिगमजी में कह्या है ।

६ प्रश्न । श्रीजंबूद्वीप पन्नत्तीमे । बीजे अध्ययनमे सातमे आलावे जिनबिंब थापना जिनबिंब पूजा पिण कह्यो ।

७ प्रश्न । हिवै १० पयन्नामे कहै । श्रीभक्तइन्ना-जीमें कह्या है । श्रावक स्वद्रव्यसे जिन चैत्यामै जिनबिंब करावै ।

८ प्रश्न । हिवै छकेदूमें कहै । श्रीव्यवहारजीमें

कहा है। प्रथम उद्देसेमें जिन प्रतिमा आगै मन सुद्ध आलोयण लै तो प्रायश्चित्त उतरै। और श्रीमहा निसीथजीमें कहा है। नवा-जिन मन्दिर करावै। विशेष भाव न होय तो पिण जीव बारमै देवलोक का बन्ध बान्धै इति।

तथा रायपसेणी सूत्रमें।

शुद्ध समकिती एकावतारी सूरिया भदेव जिन प्रतिमा जल चन्दन फूल धूप प्रमुखसें पूजी उस का फल हित सुख मोक्ष सूत्रमे वखाण्या। ऐसे जीवाभिगम सूत्रमे विजय देवता पूजा करी। तथा द्रूपदी श्रीज्ञाता सूत्रजीमें जिन प्रतिमा पूजी। जो अज्ञानी कदाग्रही द्रूपदीकुं मिथ्या त्वनी कहै सो आप मिथ्यात्वी है। भगवानके वचनसे प्रगट समकितवन्त थी सूत्रमें प्रगट पाठ है पूजा करके। नमोत्थुणं इत्यादि शक्रस्तव कह्यो। मिथ्यात्वी होय तो भावसें विधि पूर्वक जिन पूजा किसवास्ते करै। नमोत्थुणं किस वास्ते कहै। मिथ्यात्व हुवै तो अन्य देव पूजै। अन्य देवकी स्तुति करै। तथा परभर्वा मछे। नारद ऋषि देखकुं आया। तब नारदकुं असञ्जत अविरती जाणके वन्दना नमस्कार न

कियो। ऐसा सचवचन उत्थाप कर शुद्ध समकितवन्त द्रूपदी श्राविकाकुं। अपणो मिथ्या मत थापणेकुं। अपणे मुखसें मिथ्यात्विणी ठहराय दीवै। ऐसा दुष्ट महापापी पाखण्डियांको मुख देख्यां पाप लागें। ऐसा पाप्यां का वचन जे प्राणी अङ्गीकार करै। तिणां जीवांरा बुरा बहोत हवाल होगा। घणा नरक निगोद का दूष पावेंगें। उणां जीवां ऊपर बहोत करुणा आवती है।

राय पसेणी सूत्रको पाठ लिखै है।

तएणं सूरीयाभेदेवे। पोत्थ रयणं गिण्हि ति २त्ता। पोत्थयरयणं विहाडे ति२त्ता। पोत्थरयणं वाएति२त्ता। धम्मीयं ववसायं पड़िगिण्हि ति२त्ता। पोत्थयरयणं पड़िनिखवमं ति२त्ता। सिंहासणाओ अब्भुट्ठे इ२त्ता। ववसाय सभाओ। पुरिच्छिमल्लदारेणं। पड़ि निखम इ२त्ता। जेणेव णंदा पुष्करणी तेणेव उवागच्छ इ२त्ता। णंदाए पुष्करणी। पुरिच्छि मल्लेणं तोरणेणं। तिसीपाण पड़ि रूवेणं। पञ्चोरूहति२त्ता। तत्थहत्थ पादं पखाले ति२त्ता। आयंते चोख्खे परमंसुच भूए। तंजहा रययामयं। विमल सुलिल पुणं। मन्तगइ सुहागिइ। समाणं।

भिगाए पगिण्हइ इ२त्ता। जाइं तत्थ उप्प-लाइं। जाव सतपत्ताइं। सहसपत्ताइं गिण्ह ति२त्ता। णंदाओ पुक्खरणीओ पच्चोरुह इ२त्ता। जेणेव सिद्धा यतणे। तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेणं सूरिया भंदे वं चत्तारि सामा-णीय साहस्सीओ। जाव सोलस आयरक्ख देव साहस्सीओ। अन्ने बहवे सूरिया भविमाण जाव देवादेवीओ। अप्पे गईया उप्पलहत्थ गयाओ जाव सहस्स पत्तहत्थ गया सूरिया भंदे वे बहवो आभिओगा देवादेवीओ। अप्पे गईया कलस हत्थ गयाओ। जाव अप्पेगई आधुवकडुच्छ-हत्थ गया। हट्ठतुट्ठा जाव सूरियाभंदेवे चउ हिंसामाणीय सहस्सहिं। जाव अन्नेहय। वहु हिय। सूरियाभ जाव देवे हिय। देवी हिय। सिद्धि संपरिवुडे सव्वड्ढीए। जाव वाइयरवेणं। जेणेव सिद्धायतणे। तेणेव उवा गच्छइ सिद्धाय-तणं। पुरिच्छि मल्लेणं दारेणं। अणुपविसंति-२त्ता। जेणेव देव छंदाए। जेणेव जिण पडिमा। तेणेव उवा गच्छति। जिण पडिमाणं आलोए पणामं करेंति। लोमहत्थगं गिण्हंति२त्ता। जिण पडिमातो सुरभिगंधोदएणं। ण्हाणे ति२त्ता। सरसेणं गोसी सचन्दणेणं। गाथाइं

अणुलिंपतिऽत्ता । जिण पडिमाइं । अहयाइं । देवदूसजुयलाइं । नियंसेइऽत्ता । पुप्फारु-हणं मल्लारुहणं । चुन्नारुहणं । वत्थारुहणं । आहरणारुहणं करेतिऽत्ता । आसत्तोसत्तवि-उल वट्टवग्घारिय मल्लदामं । कलावंकारेइऽत्ता । कयग्गह गहय करय पब्भट्ठ विप्पमुक्केणं । दस द्धवन्नेणं । कुसुमेणं । मुक्क पुप्फपुंजो वयार कलियं करेइऽत्ता । जिण पडिमाणं पुरतो । अच्छेहिं सण्हेहिं सेएहिं । रययामएहिं । अंवछातालेहिं तं दुलेहिंतो अट्ठ मंगलए आलिहइ । तं जहा । सत्थिय जावदप्पणा । तयाणंतरं चन्दप्पभरयण वइ । वेरुलिय विमल दण्डं । कञ्चण मणिरयण भत्ति चित्तं । कालागुरुपवर कुंदरुक्क तुरुक्क धूव-मघ मघन्त गन्ध धुताभाणु चिद्धंच धूम वट्टिं । विणिमुयंतं । वेरुलियमयंकडुच्छुयं । पग्ग पत्त-यं । धूवन्दाऊण जिणवराणं । अट्ठसय विसुद्ध गन्थ जुत्तेहिं । अपुणरुत्तेहिं । महाचित्तेहिं । संथु णइ । सत्तट्ठ पयाइं । पच्चो सक्कइऽत्ता । वामं-जाणुं अंचेइ । दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु । तिक्खुत्तो मुद्धाणं । धरणितलंसि निव-डेइ । संपइ । करयल परिग्गहियं । सिरसा । एवंवयासी । णमुत्थुणं । अरिहन्ताणं जावसंप-

स्ताणं। वन्दइ। नमं सइ२त्ता।

ए रायपसेणी सूत्रनौ पाठ है। सुरियाभे-मोतें हाथ थी फूल चूंटीलीधा है। इम और सूत्रांना पाठ पिण जाणवा। तथा सत्रुञ्जय तोर्थको नाम ज्ञाता जी सूत्रमें था वच्चा पुत्र-जीके अधिकारें। तथा सुक देवताजीके अधि-कारे। तथा सेलगजीके अधिकारें तथा पांच पांडवांके अधिकारे प्रगटपणे है। अन्तगड़-दशाजी सूत्रमें पिण वारंवार शत्रुञ्जयजीको नांम है। कल्पसूत्र प्रमुखमें गिरनारजी को उज्जयन्त नाम है। जंबूद्वीपपन्नत्तीमें अष्टा-पदजीको नाम हैं। आवश्यकजीकी निर्युक्ति कल्प सूत्रजी प्रमुखमे सम्मेत शिखर जीको नाम है। असे ठाम ठाम तीर्थांका नाम शास्त्रांमें कह्या है॥

तथा केइक आ कहे। गौतमस्वामी अष्टापद नगया सो मिथ्या वात है। भगवती सूत्रकी टोका मे१४शतक ७ उद्देसामे कह्यो है। सो टीकारो पाठ लिखे है। यदा भगवता गौतमेन चैत्यवन्द-नायाऽष्टापदं गत्वा प्रत्यागच्छता पञ्चदश तापस शतानि प्रव्राजितानि। समुत्पन्न केवलानि च श्रमणभगवान्महावीरसमवसरणमानीतानि। तीर्थप्रणा-

मकरथासमनन्तरञ्च केवलि पर्षदि समुपविष्टा-नि। गौतमेन वादित तत् कैवल्योत्पादव्यति-करेणाभिहितानि। यथा आगच्छत्। भो सा घवो भगवन्तां वन्दध्वमिति। जिन नायके न गौतमोभिहितो यथा गौतमाकेवलिनामाशा-तनाकार्षीस्ततो गौतमो मिथ्या दुःकृतमदात् इति।

तथाखंधे जीके अधिकारे। हियाए सुहाए इत्यादि। पाठ सूरियामके पूजा फल पाठसे मिलायके। जो ढूंढियो इह भवको फल कहे है। सो महामूर्ख दीसे है। अो दृष्टान्त इहां कुछभी मिलै नही धनसें तो इह भवका फल हित सुखादिक प्रगट दीसे हैं। अरु पूजासें सूरियाभ देवताकुं इह भवको फलहित सुखा-दिक क्या हुवो। फेरढूंढियाके मतसे देषी जे। तब तो पूजाका फलहित सुखादिक संभवे कोइ नही। पूजाकुं तो पाप रूप कहे हैं। पापसे हितसुखादिक कहांसै होगा। इसवास्ते इह भवका फल कहै। सो वात सर्वथा झूठी कहे हैं। अरु भगवानके मार्गसें देखी जे। तब पूजासें इह भवमां है परिणामके जोगसें शुभकर्मको बंध। अशुभ कर्मकी निर्जरा यह फल हैं। सो

हित सुखादिक को कारण है। पर भवमांहे सुखको अरु बोध बीजकी प्राप्ति। परंपरायें मोक्ष की प्राप्ति फल है। निःश्रेयस नाम मोक्षको हीज है। शास्त्रमें और अर्थ नही। खंधेजीके अधिकारे धनको दृष्टान्त कह्यो है तिहां मोक्ष को अर्थ है। मोक्षका निक्षेपांके अधिकारे। द्रव्यमोक्ष १ भावमोक्ष २ कह्या हैं। तिहां द्रव्यमोक्ष ऋण का। करज उतारणादिक। मोक्षादिक जांणवो। भावमोक्ष सर्व कर्म क्षय रूप जांणवो। तहां खन्धेजीके अधिकारे गृहस्थ कुं धनसें मोक्ष कह्यो। सूरियाभकुं पूजासे भवांतरै भावमोक्ष कह्या है। इस तरे सब जगा मोक्षको अर्थ जांण ज्यौ। फेर कुमती कहै। सरियाभके अधिकारे।

पेच्चा शब्द न कह्यौ तिणसै उं इह भवको अर्थ करुछुं। तिणकुं ऐसा कहना। पेच्चा शब्द को निश्चय कोइ नही। कहां होइ कहांइन होय। जोती निश्चय कहेगो तो ठाणांङ्गसूत्रमांहे तीजै ठाणै। चउथै उद्देशे।

साधुके पञ्च महाव्रतादि पालनेका फल। हियाए सुहाए इत्यादिक कह्या है। तहीं पेच्चा शब्द है नही तो उहांभी इह भवको फल होगो

पर भवका नही होगा। ए बात प्रत्यक्ष विरुद्ध है। इसवास्ते विद्यमान तीर्थंकर वन्दन पूजनादिक का फल। तथा पञ्चमहाव्रत पालनका फल सूत्र में छियाए सूहाए इत्यादिक कह्या है। सोई फल सुरियाभ अधिकारे जांणवा। पिण धनका दृष्टान्त इंहां कहे। सो खोटा है। मिलेवो इनही। तथा जैन अनेकान्त मार्ग है। कोईक नयसे मिलावांतो योभी दृष्टान्त मिल जाय। फेरतें कहता है। जिहां पुच्चिं पच्छा पाठ है। तिहां इह भवनोहीज अर्थ है। पर भवनो नही सो बात झूठी है। श्री आचारांगजी सूत्रें ४ अध्ययनमें ४ उद्देशे। जस्सनत्थि पुरापच्छा ऐसा पाठ है। तिहां पूर्वभव पाछलाभवको अर्थ कह्यौ है। फेर पिण बीजा शास्त्रामें पेच्चा शब्दका अर्थ इमज कह्या है। सो जांणो गा। तथा ज्ञाताजी सूत्र मध्ये। मल्लिनाथ जीके अधिकारें राहाया कय बलि कम्मा कहे है। सो तीर्थङ्करदेवके पूजाकी। अरु साधु बन्दनको तो सूत्रमध्ये कहांई अधिकार दीसे नही। माता पिताके विनयको अधिकार तों दूजो है। दीवालीया पर्व्वे सिद्ध भगवानको ध्यान करे। ए अधिकार पिण है

तिणसै मल्लिनाथजी स्नान करकै अपनै भाले तिलकादिक कीयौ। सोईज वलि कर्म सम्भवे है। और्की पूजा इंहां सम्भवै नही। और जैनो गृहस्थ है तिसकै भगवानको पूजाहीज सम्भवै हैं। भगवानको पूजा करै तब अपणा भाले तिलकादिक करै हीज। सोभी उसमे आय गयौ। तथा समवायांगजो मध्ये। उपासक दृ-दशाकी हुंडीकै अधिकारै दश श्रावकांका चैत्य कह्या है। सो सामान्य वचन है। देवचन्दजी आगमसारमांहे। जिम मन्दिरादिक अर्थ लिख्यौ सोभी सम्भवै है। आनन्दादिक श्रावकै अन्य-मतो संगृहीत जिन चैत्य वन्दन पजनको निषेध कीयौ। तब अपणा चैत्य तो मोकला रह्या। इण अभिप्रायै जिन चैत्य सम्भवै है। अरु उ-णांका पिण नगरां बाहिर जक्षकाभी चैत्य था। तिणसै जक्षांकै चैत्यांकोभी अर्थ सम्भवै है। पछै पूर्णज्ञानी कहै सो प्रमाण है।

तथा ढुंढियो कहै। प्रतिमा मैं भगवान पणौ कहां है। किण पूज्या। इसको उत्तर लिखै हैं प्रतिमाजी मैं साक्षात् भगवान पणौ नही है। परं भगवानको थापना है। च्यार निक्षेप अनु-योग द्वार प्रमुख सूत्रां मे कह्या है। नाम नि-

क्षेपौ १ थापना निक्षेपौ २ द्रव्य निक्षेपौ ३ भाव निक्षेपौ ४ तथा ठाणांगपन्नवणादि सूत्रमांहे। दसभेदें सत्य कह्यौ है। तिहां थापना सत्यपिण गिण्यो है। तीर्थंकर देव गणधर देव जिणकुं सत्य कहै तिण कुं ते झूठ ठहिरावै। ऐसा उणुं सें वधता ज्ञान तेरेमें कहांसें प्रगट्या। तथा नाम निक्षेपो ते मानें। अरु थापना निक्षेपौ न मानें थापनामें भगवन पणो नही तो। नांममें भगवान पणौ कहांसे आयौ थापना उत्थापीतौ नामभी मानणा तुझकुं योग्य नही है। तवते चउवीसत्थो किसवास्ते गुणता है। आधीरांड आधीसुहागणवाली। सांगतेंभी आदयौ। मत खेंच करकें संसार समुद्रमें क्युं बूडाता है। और असमझजीवांकुं क्यूं डबोवते है। समो दृष्टिकर भगवान्‌की वाणी हृदयमें धारे। श्री दसवैकालिक प्रमुख सूत्रमें कह्यौ है। चित्र लिखित जिहां स्त्री होय तिहां पिण साधूकुं न रहणा। उस स्त्रीमें तो स्त्रीपणो कोई नही। साधुकुं उपसर्गभी नही करती है। तो भगवानजी उहां रहणा क्युं वरज्या। इसका परमार्थ एहै। उस स्त्रीकं देख्यां विकार ऊपजै है। तो भगवानकी प्रतिमा निर्विकार महा सौम्य शान्त मुद्रासे

विराजमान सो देख्यां हलु कर्मीजीवांकु शान्त-भावक्यूं न ऊपजै? प्राये प्राये ऊपजे हीज। तिणसें नांम लख्यां भगवान जैसे याद आवती हैं तैसे जिन प्रतिमा देख्यां भगवान को स्वरूप विशेष पणै याद आवै है। तिनसें जिन प्रतिमा भव्यजीवकुं महा उपगारको कारण है। दूसवास्ते हीजसूत्रांमे ठांम ठांम जिन प्रतिमा जिन सारखी कही है। सत्राको पाठ आगे लिखेंगे।

परं ढुंढियो कहै में बत्तीस आगमसे ओर न मानुं तिनकुं पूछना। किणही स्त्रीके भर्त्तार मर गयो मट्टीको भर्त्तार बनायके पास रख्यां कामन सरै इत्यादिक दृष्टान्त ते प्ररूपे हैं सो बत्तीसां मांहिले किण सत्रमे हैं। सो हमारे तांई नाम बताय अरु हमने चित्र लिखित स्त्री का दृष्टान्त कह्या है सो तो दस वैकालिक प्रमुख सूत्रमें प्रगट है ते कह्या जो दृष्टान्त सो सूत्रांमें नही है। तें मन उठाया प्ररूपे हैं अब तो तें प्रत्यक्ष म्रषावादी है। क्यूं झूठो मन उठाई बात प्ररूपके बापडां भोलां जीवां कुं दुर्गतिमे पड़े हैं तथा ते कहता है। आगे प्रतिमा किणे पूजी श्रीभगवती सूत्रमां है। तुं गिया नगरीके श्रावक साधु वन्दनकुं गए। अब

स्नान करी भगवानकी पूजा करके पीछे गए भगवतीजी सूत्रमां है २ शतके ५ उद्देसें ग्हा या कयबलिकम्मा। ऐसा प्रगट पाठ है।

वलि कर्म पूजाको है कदाचित् ति कहेगा। उणे कुलदेवी पूजी। सो बात संभवै नही उणे समकित उचर्यो। तवहीज अन्य देवी देवता प्रमुख सबकी पूजाको पच्चखाण कियो है देव देवोकुं पूजते है सहायके वास्ते उवे किणही को सहाय नही चाहते हैं। सूत्रमे असहिज्ज ऐसो पाठ है तथा उपासक दसा सातमे अङ्गमे आनन्दश्रावक समकित उचर्यो तिहां अन्य मती ग्रही जिन प्रतिमा वांदवो पूजवो निषेधी तव अन्यमती न ग्रही जिन प्रतिमा वांदवा पूजवा योग्य ठहिरी। ऐसे उववाई उपांगमें अंबडश्रावकको आलावो पिण जांणणो। तथा उत्थापकक कहै।

साधुलब्धिफोरवै नही सो मृषावादी है। मृषावाद वोले है जिनकल्पी साधु नही फोरवै थिवरकल्पी साधु कोई कारणे लब्धिफोरवे सो अधिकार श्रीभगवती सूत्रमे ठाम२ है। भगवान श्रीमहावीर स्वामीजी कल्पातीत छे। उणांभी दयाके कारणे लब्धिफोरवी सीतल लेस्यामुंकी।

गोशालेने जलतेकुं बचायौ। ए अधिकार श्री भगवतीजी सूत्रके पनरमे शतके गोशालेके अधिकारे प्रगट पाठ है तथा ऊहांहीज कह्या है। सुमङ्गल साधुकुं गोसालेका जीव विमलवाहन राजा हुयके उपसर्ग करेगा तब साधु क्षमा करेंगे फेर दूजी वेर उपसर्ग करेगा तब साधु ज्ञानोपयोगसे गोशालेका जीव जाणके कहेगी। अरे गोशाला तेनै श्रीमहावीर स्वामीजीके दोय शिष्य तेजो लेश्यासे जलाए। तथा महावीर स्वामी सन्मुख तेजो लेश्यामुंकी। सो उवे महा क्षमावन्त थे। अपराध सह्या परं मेरेसे नहीं सह्या जाय में तप तेजसे जलायके भस्म कार दुङ्गा। इतना कह्यां।

पीछे फेर उपसर्ग करेगा तब साधु तेजो लेश्यासे रथादि सहित राजाकुं वाल भस्म करेंगे आप एकावतारी पणै सर्वार्थ सिद्ध विमानमे ऊपजेंगे ऐसा श्रीभगवती सूत्रमे १५ शतके पाठ है। तथा श्रीभगवती सूत्रजीके १२ शतके नवमे उद्देशे। साधूके वैक्रिय लब्धिफोरवणेको अधिकार है सो पाठ लिखते हैं।

भवियदव्व देवाणंभंते। किंएगत्तं पभूविउ व्वित्तए। पहुत्तंपि पभूविउव्वित्तए। गो। एग-

त्तंपि पभूविउव्वित्तए। पुहुत्तंपि पभूविउव्वित्तए। एगत्तंविउव्वमाणे। एगिंदिय रूवंवा जाव पंचिंदिय रूवंवा। पुहुत्तंविउव्वमाणे। एगिंदिय रूवाणिवा। जाव पंचिंदिय.रूवाणिवा ताइं संखिज्जाणिवा। असंखिज्जाणिवा। संबद्धाणिवा। असंबद्धाणिवा। सरिसाणिवा। असरिसाणिवा। विउव्वित्तए। विउव्वित्ता। तउपच्छा। अप्पणो अप्पणो जहिच्छियाइं। कज्जाइं करेति। एवं नरदेवावि धम्मदेवावि। देवाहिदेवाणं पुच्छा। गो। एगत्तंपि भूविउव्वित्तए। पुहुत्तंपि पभूविउत्तए। नोचेवणं संपत्तीए। विउव्विंसुवा। विउव्विंतिवा। विउव्विस्संतिवा भावदेवाणं पुच्छा। जहा भवियदव्वदेवाणं इत्यादि।

इहां पिण साधूवैक्रियलब्धिफोरवी। मनचाह्या कामकरै ए प्रगट पाठ है। तथा भगवती सत्र में जंघाचारण विद्याचारण साधू के प्रगट लब्धि फोरणे कौ पाठ है। ऐसैं पन्नवणा उपांग में साधू आहारक लब्धि फोरवे। एक भवे २ बार। सर्व भवे ४ बार ऐसा प्रगट पाठ है। तिण सैं साध लब्धि फोरवै नही। ऐसी बात कहै। सो बहुत झूठा है।

कारण फोरवै। भगवान पधारै। तब देवता
बिगड़ो रचै। ए अधिकार आवश्यकमें विस्तार
सी है। सो पाठ लिखें हैं। अच्छअपुव्वो सरयं
जत्थयदेवो मह्ड्ढिओएति। वा उदय पुप्फ
वद्दल पागारति यंच अभिओगा॥ १॥ मणि-
कणगरयण चित्तं भूमी भागं समं तओ सुरे-
हिं। आजोयणं तरेणं करंति देवा विचित्तं
व॥ २॥ विंटट्ठाइं सुरहिं जलथलयं दिव्व
कुसुम नीहारिं। पयरंति समं तेणं दस-
दवन्नं कुसुम वासं॥३॥ मणिकणगरयण चित्ते
चउद्दिसंतोरणे विउव्वंति। सच्छत्तसालभंजि-
यमयरद्धय चिंधसंठाणे॥ ४॥ तिण्णिय पायार
वरे रयण विचित्तेतहिं सुरगणिंदा। मणि
कंचण कवि सीसय विभूसिए तेविउव्वंति॥५॥
अभिंतर मज्झवहिं। विमाण जोइ भवणाहिव
कयाओ। पायारातिन्निभवे रयणे कणगे अरय
एअ॥ ६॥ इत्यादि।

आया हिण पुव्वमुहो। तिदिसिं पडिरूव-
गाउ देवकया। जिट्ठगणी अन्नो वा दाहिण
पुव्वे अदूरंमि॥ १॥ इत्यादिक पाठ जाणिवो।
श्रीशरीर स्वामीजी कै। सात मैं पाठें श्री-
भद्रबाहुस्वामी। श्रुत केवली चउदै पुर्वधारी

दशाश्रुतस्कन्धव्यवहारवृहत्कल्पप्रमुखसूत्रकर्त्ता। आचार्य्य आवश्यक निर्युक्ति मैं। ए तिगडे कौ अधिकार प्रगटपणै कह्यौ है। बत्तीसं सूत्र मानेंगा सो एभी मानेगा। बत्तीसा मैं निर्युक्ति सकारी है। सो पाठ प्रथम लिख्यौ हो तथा श्रीमहावीरस्वामी एक राति में अड़तालीस कोस विहार करी मज्झिमा पावा पुरी आए। इसको पाठ आवश्यक निर्युक्ति सूत्रमें तो इतनो है।

उप्पन्नंमि अणंते नट्ठंमि अछाउ मत्थिए नासो। राईए संपत्तो महसेण वणंमिउ-ज्जाणे ॥ १ ॥ अमरनररायमहिओ। पत्तो धम्म-वरचक्कवट्टित्तं। बिइयंपि समोसरणं। पावा ए मज्झिमाएओ ॥ २ ॥ इसकै अर्थ में लिख्यौ। ततो द्वादश योजनेषु मधमा पुर इत्यादि। तिण सैं बारै योजनका अड़तालीस कोस भया। जृम्भिक गामसें पावा पुरी ४८ सकोस है। पूर्व-देसमें प्रसिद्ध है। इस वात मै संदेह नहीं। हम पावापुरी चलिय कुण्डग्राम। कुम्मारगाम-पमुख सब ठिकाणा पायैं देष आए है ॥२॥ साध लब्धि फोरवै सो अधिकार भगवती की प्रमुख वहुत शास्त्रमै है। सो पाठ पहिला पानामैं

लिख्यौ है ॥ ३ ॥ तथा श्रीमहावीरस्वामी छद्म-स्थपणै में मूलगा मौन पणैं कोई रह्या नही। बहुत तौ मौनपणें रह्या है। जरूर काम पड़्यां दोय च्यारवार बोल्या है। श्रीआचारांगसूत्रै प्रथम श्रुतस्कंधे। नवमें अध्ययनें श्रीमहावीर-स्वामी जीकी छद्मस्थावस्थाऽधिकारें। अबहु वाई ऐसो पाठ है। अबहु भाषीत्यर्थः ॥ ४ ॥ जिनमंदिर जिनप्रतिमा करायां का बड़ा लाभ है। थोड़ा दोष शास्त्रमें कह्या है। श्रीमहा-निशीथ सूत्रका पाठ लिखे है।

काऊणजिणाययणेहिं मंडियंसव्वमि इणी पीठं। दाणाइ च उक्केणं सड्ढो गच्छिज्ज अच्चु अंजाव ॥ १ ॥ इत्यादि।

तथा आवश्यक निर्युक्तिमें भी वंदनाध्ययनें कह्यौ है।

अकसिणपवत्तयाणं विरया विरयाण एस खलु जुत्तो। संसारपयणु करणे दव्वथएकूव-दिट्ठंतो ॥ १ ॥ एसत्ति जिनगृहनिमपिणादि-द्रव्यपूजाविधिरित्यर्थः।

आवश्यक निर्युक्तिमें। तथा चूर्णिमे वग्गुरसेठ श्रीमहावीरस्वामी जो विद्यमान थकां श्रीमल्लि-नाथ जीकौ देहरौ पड़ गयोथ्यौ उसकौ जीर्णोद्ध-

द्वार करायौ प्रतिमाजी पूज्या। एक दिन पुरि-मताल नगर बाहिर वीरस्वामी छद्मस्थपणैका उसग्ग रह्या। ईशानेंद्र वांदण आया। वग्गुर-सेठ वगीचे मै। जिन पूजाकरण जातौ थौ। भगवानकी खबर नही पड़ी। पास हुय नीकल्यौ। तब ईशानेंद्र कह्यौ। अहो वग्गुर तुझ कुं प्रत्यक्षतीर्थंकर दिखाउं। प्रथम इणांकी भक्तिमहिमा करकै पछै प्रतिमाजी पूजणे। अैसा इंद्रका वचन सुनकै प्रथम वीरस्वामी जीकी महिमा करकै पीछै प्रतिमाजी पूंज्या। तिणकौ पाठ लिखे है।

तत्तोय पुरिमताले वग्गुर ईसाण अच्चए पड़िमं। मल्लिजिणायणपड़िमा उणहातंतु वहुगुट्ठी ॥ १ ॥

इसको अर्थ चूर्णिकार श्रीदेव ढिगणि क्षमा श्रमण विस्तारसें कियो है। तिणकौ भावार्थ तौ इहां लिख दीयौ है। पाठ बहुत है तिणसै नही लिख्यौ है। तथा आवश्यक निर्युक्तिमें। अष्टापद तीर्थ ऊपर भरतचक्रवर्त्ति २४ भगवानकौ देहरो करायौ। भायां का थूंभ कराया। ऐसो अधिकार है। सो पाठ लिखे है।

थूंभ सयभाउ भायां चउवीसंचेव जिण-

हरि कासी। सव्वजिणाणं पड़िमा वणवन्ना-
णेहिं नियएहिं ॥२॥ आयसघरे पवेसो भरहे-
पड़णं च अंगुलीयस्स। सेसाणं तुमुयणं संवेगो
नाणदिक्खायं ॥ २ ॥ इत्यादि।

तथा श्रीगोतमस्वामी अष्टापदपर्वत चढ़या।
जिन प्रतिमा वांदी। पनरेसैतीस तापस प्रति-
बोधया। ए अधिकार दस वैकालिक निर्युक्ति
प्रमुख सूत्रांमि हैं। उहां को पाठ संक्षेपैं पाठ
लिखै है। सोऊण तं भगवओ गच्छइ तहिं गोय-
मोए हियकित्ती। आरुहइ अनगवरं पड़िमाओ
वंदइजिणाणं ॥ १ ॥ इत्यादि।

श्रीभगवती सूत्रमें चिरपरिचिओसि। गोयमा
इत्यादिक पाठमें। पिण ए अधिकार सूच्यो है।
टीकाकार जी खोलकै लिख्यो हैं। सो अधिकार
बहुत है। तिणसैं नही लिख्यो है।

तथा जिन प्रतिमां जिन सारखी को अधि-
कार ठाम ठाम है। सो लिखु है। रायपसेणी
सूत्रमध्ये सूरीयाभ देवता एकावतारी सम-
किती श्रावक जिन प्रतिमा पूजी। तिहां
धूवंदाउण जिण वराणं। ऐसो पाठ है। गणा
धरदेवणी जिनप्रतिमाकुं जिनवर कहि बुलाया
तब जिनप्रतिमा जिन सारखी हुई की नही। वि-

धारणो ज्यो। तथा उवाई सूत्रमध्ये। तीर्थङ्कर वाद्यांकौ फल। हियाए। सुहाए। खेमाए। निस्सेयसाए। आणुगामि अत्ताए। भविस्सई। ऐसो कह्यौ है। योहीज फल। रायपसेणी मध्ये प्रतिमा पूज्यांको कह्यौ है। तव जिन प्रतिमा जिन सारखी है कै नही। तथा ज्ञातासूत्र मध्ये। द्रूपदीके अधिकारे। जेणेव जिणघरे। तेणेव उवागच्छइ ऐसो पाठ है। इसको अर्थ विचारज्यौ। जिन कहियै तीर्थङ्कर तिणांकौ घर कहियै मन्दिर अर्थात् देहरो तिहां जायै। उस मन्दिरमे भगवान तो नही बैठे हैं। प्रतिमाजो है। तिणकुं सूत्रकारजी जिणघर कह्यौ जिन प्रतिमा जिन सारिखी न ह्वै तो जिणहर क्युं कहै। मृषावाद दोष लागै। तथा भगवती सूत्रमध्ये चमरेन्द्रके अधिकारे तीन शरणा कह्या। अरिहन्तजीका १। अरिहन्त प्रतिमाका २। भावितात्मा साधूजीका ३। अरु आसातना कही। अरिहन्तजीको १ अरु साधूजीकी २ जिन प्रतिमा जिन सारखी है। तिणसे जिनप्रतिमाकी आसातना सो जिनको आसातना है। इसवास्ते २ गिणी है। श्रीभगवती सूत्रको संक्षेपे पाठ लिखे हैं।

किं निस्साएणं भन्ते। असुरकुमारा देवा- उड्ढं उप्पयन्ति जावसोहम्मोकप्पो। गो यमा। असुरकुमारदेवा० इत्यादि। नणत्थ अरिहन्तेवा १। अरिहन्त चेइयाणि वा २। अण गारेवा भावि अप्पणो ३। निस्साए उड्ढं उप्पय न्ति। जावसोहम्मो कप्पो। तं महादुक्खं खलु तहा रूवाणं। अरीहन्ताणं। भगवन्ताणं। अण गाराणं। अच्चासायणाए त्ति कट्टु इत्यादिक प्राठ जाणणा ॥७॥

तथा केवल ज्ञानीजी केवल उपज्यापछै पिण आहार करै। उत्कृष्टामववरसकुणाको- डि पूर्वकेवल ज्ञानीजोवै। आहारविगर इत- नो कालऊदारिकशरीर कैसे चलै। वेदनी कर्मकोउ देहेईज। तैजस सरीर। आहार पचावणेवालो छेईज। आहारकी तृष्णा कोई है नही। क्षुधा वेदनी उपसमावणेकुं आहार लेते है। ज्ञानगुण अनन्तप्रगच्यो है। सो आंत्माको गुण है। सरीर नवो कोईरूवो नही। पुद्गलरूप है। इसवास्ते केवल ज्ञानी आहार करते है। अणसण सन्थारो करै तब आहारको सर्वथा त्याग करै। सो सूना मे ठांम ठांम अधिकार है तीर्थङ्कर महाराज

केवल ज्ञान उपज्यां पछै आहार तो करै। परं आप लेनेकुं न जाय। आहार दूषण टालनेकुं महा उपयोगी चउद पूर्वधारी प्रमुख साधु आहार लाय देवै। नही तो आपही ल्यावै। तथा शिष्यकुं केवल उपज्यो हुवे गुरुकुं खबर न हुवे तो गुरु न आवै तांलग केवली शिष्य गुरुकुं आहार लाय देवै। जैसे पुष्फचूला आर्या अन्यका सुत आचार्य्यकुं आहार ल्याय दीयौ।

इहां महानिसीथकी साख लिखी है। तथा आवश्यक निर्युक्ति दसवैकालिक निर्युक्तिकी साख लिखी है। सो बत्तीस सत्रांके अनुसारे लिखी है। नन्दीसूत्रमे महानिशीथ गिण्यौ है तथा निर्युक्तिचूर्णि भगवतीजी प्रमुखने गिण्या है। तिणसे बत्तीस मानेगा। सो इणांकुंभी मानेगा। अरु कहै मैं बत्तीस मानताहुं सो प्रत्यक्ष मृषावादी है जिन सासनको चोर है। उसकी सङ्गति करेगो सो वा पड़ा बहुत भव समुद्रमे बूडेगो। तथा शत्रुंजय विमलाचल तीर्थ ऊपर। थावच्चा पुत्रजी शुकजी हजार२ परिवारसे मुक्ति भया। सेलगजी ५०० साधु साथे अरु पांच पांडव प्रमुख मुक्ति गए इत्यादिक

अधिकार ज्ञातासूत्र प्रमुखमे प्रगट हैं। सबकुंजे महात्म्यमे विस्तारसे हैं सो जाणोगे।

तथा श्रीअणुयोगद्वारसूत्रमध्ये भावश्रुतनिक्षेपाधिकारे। महियपूइयमंदिकरी समवसरणमें विराजमानभाव जिन सुर असुर नर विद्याधरे भावे। तथा द्रव्ये पूज्या कह्या है सो पाठ लिखे हैं

सेकिन्तंलोगुत्तरियं नो आगमओ भावसुयं।२। जं इमं अरिहन्तेहिं भगवन्तेहिं। उप्पन्ननाणदंसणधरेहिं। तीयडुप्पन्नमणागयजाणएहिं। तेलोक्कवहियमहिय पूइएहिं सव्वन्नूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसङ्गंगणिपिड्गमित्यादि। इसका अर्थ विस्तारे टीकायें जाणज्यौ। —

तथा आपणे हाथसे फूलचूंटके चढ़ावणाको सूत्रामें प्रगट पाठ है। श्रीरायपसेणी सूत्रे एकावतारी समकिती श्रावक सूरियाभ नाम देव प्रदेशी राजाको जीव। तिणे नन्दावावड़ीमे उतरके तिहां उत्पलपद्म शतपत्र सहस्रपत्र कमलप्रमुख फूल लेके सिद्धायतने आय प्रभुकुं चढ़ाया ए अधिकार है ऐसे जीवाभिगमसूत्रे विजया नाम देव समकिती श्रावक अपने हाथे वावड़ीहिं से कमलफूल स्वयमेव चढ़ाया। ऐसे

जंबूद्वीप पन्नत्तीमे सूत्रे जन्माभिषेक अधिकारे देवता आपने हाथे क्षीरोद समुद्रमांहिसे कमल ल्यायके प्रभुकुं चढ़ाया ए अधिकार है। इणां सूत्रांको पाठ निकलायके देख लेज्यौ। अरु देवताके अनुसारे मनुष्य श्रावकभी पूजा करे हैं। जिसवास्ते ज्ञाताजीके सूत्रमे द्रौपदीके अधिकारे पूजा अवसरें सूत्रकारजी भलामण लिखी है। जहा सूरियाभे इत्यादि। फेर आपने हाथें फूल लेतां जयणा पिण बहोत होती है कली तोडे नही विना खुल्या फूल लै नही त्रसजीव युक्त फूल ले नही इत्यादिक बहुगुण है। तथा जिण श्रावकै सचित्तका त्याग है सो आपने हाथे कोई तोडे नही तोड़ावैभी नही ए प्रश्न का उत्तर जांणवा। तथा रायपसेणी सूत्रे श्रीमहावीरदेवे सूरियाभकुं ऐसा कह्या। सूरियाभतुमंणं भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए ॥ १ ॥ सम्महिट्ठी नोमिच्छदिट्ठी ॥२॥ परित्तसंसारी। नो अपरित्तसंसारी ॥ ३ ॥ सुलभवोहिए। नो दुल्लभवोहिए ॥४॥ आराहए। नो विराहए ॥५ चरिमे। नो अचरिमे ॥६॥ ऐसे सूरियाभदेवे। सतरभेदी पूजाकरी ते पूजा उथापेसो जिन वचनका उत्थापक जानना।

प्रश्नः। भगवान् जीकी पूजाका अधिकार खुलासा आचचन्दन पुष्प आभूषण ए अधिकार जीवाभिगमजीमे देख लेना।

प्रश्नः। दाढांरो बहुमान्य प्रतिमा तुल्य है जीवाभिगमजीमे देख लेना।

प्रश्नः। पुस्तकका कहां अधिकार सूत्रमें है सो जीवाभिगमजीमे देख लेना।

प्रश्नः। फूल सचित्त ए अधिकार रायपसेणीमे। समवायाङ्गजीमे सूत्र पाठ जलज थलज भास्सरप्पभूयस्स विंटट्टाइयस्स इत्यादि टीका पाठः जलज पद्मादि स्थलज विचिकिलादि इत्यादि पाठ देख लेना।

प्रश्नः। अंबड़परिव्राजक श्रावक धर्म अङ्गीकार कीया पछे अ वीतराग देवकी प्रतिमाहीज वांदणी पूजणी राखी अन्य देवकुं तथा स्वदेवकुं अन्यने ग्रहण कीया तिणकुं वन्दनादिक पच्चख्खाण कीयो ओ अधिकार उववाई जीमे लिपाठ मे पृष्ठ ८६ मे देख लेना।

प्रश्नः। ठाणांगजीमे ६मे ठाणे मेऽपुन्यनो अधिकार सो वे साधु आश्री कहे हे। सो टीकाकारो पाठ इसीतरे लिख्यो हे। पाच भणी अन्न दान देनेसेतो जिको तीर्थङ्कर नामादिक पुन्य

प्रकृति बन्धतिको अन्न पुन्य कहीजै एसीही सब ऽपुन्यमे पुन्य विचार लेना। तथा इहां पाच शब्दका आगुं निर्युक्तिकारजी श्रीभद्रबाहु स्वामीजी आवश्यक निर्युक्ति मध्ये पाव शब्दका ऐसा ३ अर्थ किया है।

उत्तम पत्तं साहु १ मज्झिमपत्तं च सावया भणिया २। अविरइ सम्मदिट्ठी जहन्न पत्तं ३ मुणेयव्वं॥ १॥ ए ३ तीन अर्थ जांनना।

प्रश्नः। तथा कोई मनोमती कहैं मानुषोत्तर पर्वते मन्दिर प्रतिमा नही ते झूठ बोले। तथा श्रीभगवतीसूत्रे २० शतके ९ उद्देशे। विज्जाचारणस्सणं भंते तिरियं केवतिए गतिविसए पन्नत्ते। गो। सेणं इत्तोएगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेंति २ त्ता। तहिं चेइयांइं वन्दइ। तहिं चेइयां २त्ता। वितिएणं उप्पाएणं। नन्दीसरवरेदीवे समोसरणं करेति नन्दी० २ त्ता। तहिंचेइयाइं वन्दइ इत्यादि।

इसो पाठ जंघाचारण विद्याचारण साधुके अधिकारे साक्षातदीसे है। सोइणहीज भगवती सूत्ररे वचनसेती तिहां मानुषोत्तरनें विषे पिण चैत्य है प्रतिमा है सो साधवांदै इसो निश्चय कीजै है।

प्रश्नः। तथा भगवतीजीरे ८श। ६ उद्देशे निर्जरा आश्रीपाठ है। समणं वा माहणं वा तठे ती साधूरोहीज अर्थ ३ प्रश्नामे है और ठिकाणे प्रथम शतकरे ७ उद्देशेमें समणस्स वा माहणस्स वा दूसो पाठ है। तिहां देवलोक गमन आश्री है तिहां समण पदे साधु है। माहण पदे श्रावक है। सो निर्जरा आश्री पाठ तो साधूको हीज संभवे साधूविना औरकुं दान देणे तहां निर्जराको संभवहीज नहो पुन्यबंधको संभव होय वाकीतो दोनेही अर्थ ठूकै है।

दसविहे वेयावच्चे। पं। तं। आयरिय वेयावच्चे ॥१॥ उवज्झाय वेयावच्चे ॥२॥ थेरे वेयावच्चे ॥ ३ ॥ तपस्स वेयावच्चे ॥४॥ सिहे वेयावच्चे ॥ ५ ॥ गिलांण वेयावच्चे ॥६॥ कुलवेयावच्चे ॥ ७ ॥ गण वेयावच्चे ॥८॥ संघ वेयावच्चे संघ चतुर्विध संघनी वेयावच्च करइ ॥९॥ साहम्मिय वेयावच्चे ॥ १० ॥ ४२ ॥ आयरिय वेयावच्चे कारे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे। महापज्जवसाणे भवन्ति ॥४३ उवज्झाय वेयाववच्च करे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति २ ॥ ४४ ॥ थेरे वेयावच्च करे माणे। समणे निग्गंथे महा निज्जरे महापज्जवसाणे भवति ३ ॥४५॥ तवस्सि

वेयावच्च करे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ४ ॥ ४६ ॥ सिहे वेयावच्च करे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जं वसाणे भवइ ५ ॥४७ ॥ गिलाण वेयावच्च. करे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जव-साणे भवई ६ ॥ ४८ ॥ कुल वेयावच्चकरे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ७ ॥४९॥ गण वेयावच्च करे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ८ ॥५०॥ संघ वेयावच्चकरे माणे समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ९ । च्यार प्रकारो संघ साधु साधवी श्रावक श्राविका। इणांरो वेयावच्च कर तो थको श्रमण निग्रन्थने महामोटी निर्जरा महामोटो फललाभ ऊवइ ॥५१॥ साहम्मिय वेयावच्च करे माणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवई १० ॥५२॥ तिबेमि ५२ । व्यवहारस्स दसमो उद्देसो समत्तो १० इति व्यवहार सूत्रं।

गोतमस्वामी अष्टापद चेत्य वान्दण गए। ए अधिकार आवश्यक जोरी हरिभद्रीकामो। मकड़ी का तंतुके आसरे चढे किरणका उहां नहो कहा है। किरण तुल्य अपणा तेज है।

यथा रावणेन एका अष्टापद गीरि उपर भरत जी कराया स्वस्व वर्ण प्रमाणोपेत चउ-वीस जिन प्रासादरि विषै ऋषभादीनां द्रव्य पूजां विधाय। मन्दोदरी आदि लेके १६ सहस्र अन्तेउर सहित नाटक करतां अपणी वीणाकी तान्त तूटो। तद्जिनगुणगानरङ्गका भङ्गके डरसे अपणो नसा काटके तानसांधी तणजिन भक्तिसे तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जितं। मच्छा विदेहमे तीर्थङ्करभावी। इण रीतसे औरजीवे पूजायां जलोविधेय:। भाष्यमे कहा है। श्री भगवानकी आज्ञायें: मन वचनका यात्रिक-रण सुद्धकर भक्तिकरवी जिन आज्ञा है सो सर्व धर्मकृत्यको मूल कारण है जिन आज्ञा विना सर्व धर्म कार्य निरर्थक है ऐसा जानके जिन आज्ञारि विसै यत्न करो।

उक्तञ्च। आणा इतवो आणाइ संयमो तह यदाणमाणाए। आणारहिओ धम्मो पलालपूल व्वपुरिहाइ॥१॥ अपिच। भमिओ भवोअणन्तो तुह आणा विरहिएजीवेहिं। पुण भमिय व्वोतिहिं जेहिंनंऽगीकया आणा॥२॥ जो न कुणइ तुह. आणं सो आणं कुणइ तिउ अणा भंगस्स। जो पुण कुणइ जिणाणं तस्साणातिह

अत्रेव ॥ २ ॥ इति ॥ ५४ ॥

वज्रस्वामी जीरो अधिकार आवश्यक जीको निर्युक्तिमे है पुष्प लेणेवास्ते गया संबंध सहित सो देख लेना ॥ ५५ ॥ भगवान समवसरणे नमस्तीर्थाय ऐसा कहै ए अधिकार आवश्यकी समवसरणाधिकारे पत्र ११३ मे देख लेना ॥ ५६ ॥ भगवानकी मुद्रा देखसे क्या होय एसा कहै जिसकुं कहिणा आवश्यकजीमे ऐसा कहा है। मुद्रा देखनेसे सामायिक पामै टीकामे तथा निर्युक्तिमे है कोई कहे किणकुं प्राप्ति भई। यथा श्रेयांसेन भगवद्दर्शनात् अवाप्तं दिट्ठेगाहा ॥ ५७ ॥ भगवानको मुद्रा आर्द्र कुमार देखा देखनेसे बहोत लाभ हुवा ॥ ५८ ॥ साधु नदी उतरे सो अधिकार आचारांगमे दूजे स्कंध ३ अध्ययन २ उद्देशे पत्र २४५ चिपाठ मे देख लेना एगं पादं जले किच्चा एगं पादं थले किच्चा प्रमार्जना पूर्वक पछै प्रवेश करै इर्या सोधता जानुप्रमाण जलकदासजलयादा प्रवेश कीया पछै होय तो उपगरण भेला कर तरकी नीकलै पछै आलोयके जावै ॥

शुभम् ॥